

## आदिवासी समाज की राजनीतिक चेतना के विकास में धार्मिक संगठनों की भूमिका

डॉ० किरण पूनियां

सह-आचार्य, राजनीतिक विज्ञान विभाग

श्री गोविंद गुरु राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा (राज०)

सार

यह पेपर राजस्थान में अनसूचित जाति और कथा जनजातियों की वर्तमान स्थिति की जांच करता है। जैसा कि सर्वविदित है, राजस्थान अनसूचित जाति और जनजाति के दृष्टिकोण की संख्या के मामले में भारतीय राज्यों में दूसरे स्थान पर है। राजस्थान के निवासी लगभग तीन दसवां हिस्सा अनसूचित जाति और घुमक्कड़ जनजाति के सदस्य हैं, जो अप्रत्याशित नहीं है क्योंकि वे सबसे अधिक उत्पीड़ित समूह भी हैं। राज्य की अनसूचित जाति और जातियों जनजाति क्षेत्रों क्षेत्रों से दूर क्षेत्रों में रहता है। उनका पूर्वाग्रह और क्रूरता का एक बहुत ही भयानक इतिहास रहा है, जो टिका हुआ है और उन पर वर्तमान में नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। पिछले 50 वर्षों में, सरकार ने स्वदेशी लोगों के कल्याण और विकास के लिए अपनी महान देखभाल का प्रदर्शन करते हुए कई नीतिगत उपाय, कल्याणकारी कार्यक्रम और विकास कार्यक्रम शुरू किए हैं। सभी विकासों के प्रमुख लक्ष्य दूरस्थ और आदिम कई सामाजिक आर्थिक स्थिति को मूल रूप से लागू करते हैं। जनजातीय विकास के क्षेत्र में प्राप्त संबंधी शिक्षा, दृष्टिकोण और विकास तकनीकों को समान रूप से प्रासंगिक बनाते हैं। वास्तव में, आधिकारिक सहायता के बावजूद, स्वदेशी लोगों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आया। जनजातीय समुदायों के अंदर ऐसी ताकतें पैदा करने के मामले में जो जनजातीय समुदायों के सामाजिक आर्थिक मानकों में बदलाव को बढ़ावा देने के लिए सक्षम हैं, ऐसा लगता है कि विभिन्न योजना और योजना और उनके एक डाउनलोड के रूप में काम नहीं कर सकते। इस बैंक के खिलाफ एक राजनीतिक दृष्टिकोण से जनजातीय मुद्दों की जांच की गई है। जनजातीय क्षेत्रों द्वारा अपने स्वयं के वर्गों के लक्ष्यों के दृष्टांतों के उपयोग की जाने वाली प्राथमिक जड़ी-बूटियों को राजनीति के रूप में विकसित किया गया है। इसके कारण, राजनीति में जनजातीय विविधताएं बढ़ी हैं और जनजातीय क्षेत्रों में काव्य आंदोलन शुरू हुए हैं।

कीवर्ड:- धार्मिक संगठन, राजनीतिक चेतना, राजस्थान का आदिवासी समाज, आदिवासी समाज की राजनीतिक चेतना का विकास

## 1. परिचय

धार्मिक संगठन जनजातीय समुदायों के विकास में अपनी यात्रा के परिणामस्वरूप तेजी से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन कारकों में उच्च स्तर की प्रेरणा, समुदाय के साथ घनिष्ठ संबंध, स्थानीय पाठ्यक्रम के प्रति प्रदर्शन, आविष्कारशीलता और आपके काम के प्रति समर्पण शामिल हैं। इसके अलावा, धार्मिक संगठन स्थानीय सांकेतिक रूप से सक्षम होने में सक्षम हैं। चल रहे अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य क्रमशः भारतीय राज्य राजस्थान में संचालित धर्म संगठनों का विभाजन और प्रभाव है। यह महिलाओं का व्यवहार, स्वास्थ्य, कानूनी सहायता, वित्तीय विकल्प, व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि के मुद्दों सहित महिलाओं के सत्यापन की ओर लक्षित विभिन्न प्रकार की स्वैच्छिक गतिविधियों में संलग्नता को दर्शाता है।

कभी-कभी ऐसा माना जाता है कि धार्मिक संगठन को सरकारी संगठन की तुलना में तीन लाभ होते हैं: (क) उनके सरकारी कर्मचारियों की तुलना में दबंग की पीड़ा को कम करने की अपनी नौकरी में अधिक कर्तव्यनिष्ठ हो सकते हैं (बी) सरकारी कर्मचारी की तुलना में ग्रामीण बन्धनों के साथ उनके बेहतर संबंध हो सकते हैं और (सी) चूंकि स्वैच्छिक संगठन सख्त सख्ती शर्तों और बंधों से बंधे नहीं हैं, वे अपनी गतिविधियों को जल्दी और लगातार समायोजित करने में सक्षम हो सकते हैं।

### ● आदिवासी विकास

स्वदेशी समुदायों के विकास के लिए समान प्रावधान भारतीय संविधान में पाए जा सकते हैं। भारतीय संविधान की अनुसूची 5 के अनुसार, अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित क्षेत्रों को नियंत्रित करने और उनकी देखरेख करने के लिए राज्य कार्यकारिणी की शक्ति का विस्तार किया गया है। इस शक्ति के आधार पर, राजस्थान की राज्य सरकार ने 1975 में जनजातीय क्षेत्र विकास विभाग की स्थापना की, ताकि इस आदेश के अनुसार वहां स्थित जनजातीय समुदायों के लोगों के सामान्य विकास को सुगम बनाया जा सके। व्यापक रणनीति के साथ-साथ अनुसूचित जनजातियों की उन्नति के प्रयासों को सुनियोजित और समन्वित किया जाना चाहिए।

विभाग का प्राथमिक उद्देश्य आदिवासी वर्ग के जीवन स्तर को ऊपर उठाना है। यह अनुसूचित जनजातियों के एकीकृत सामाजिक-आर्थिक विकास पर अधिक जोर देकर और अनुसूचित जनजातियों के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करके पूरा

किया जाएगा। यह अनुसूचित क्षेत्र के समग्र विकास के लिए विभिन्न योजनाओं की तैयारी, समन्वय, नियंत्रण और निर्देशन के माध्यम से किया जाएगा।

#### ● राजस्थान की जनजातियाँ

राजस्थान में जनजातीय लोगों का प्रतिशत कुल जनसंख्या का लगभग 12% है। वास्तव में, वे उस क्षेत्र में रहने वाले पहले लोग थे जो अब राजस्थान के रूप में जाना जाता है। राजस्थान, भारत की दो मुख्य जनजातियाँ भील और मीना हैं। सहरिया, गादुलिया लोहार और गरासिया कुछ निम्न जनजातियाँ हैं। राजस्थान की कई जनजातियाँ उन विशेषताओं से जुड़ी हुई हैं जो उनमें समान हैं। प्रत्येक जनजाति अपनी सजावट, त्योहारों और कपड़ों के मामले में दूसरों से भिन्न होती है।

राजस्थान की कुछ प्रमुख जनजातियाँ निम्नलिखित हैं:

#### ● भील

भील, राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति, राज्य की कुल जनजातीय आबादी का 39% से अधिक है। यह जनजाति बांसवाड़ा के आसपास के क्षेत्र पर हावी है। उन्हें कुशल धनुर्धर माना जाता था, और रामायण और महाभारत दोनों भील धनुर्धरों का संदर्भ देते हैं। भील अपनी आबादी को स्थिर रखने के लिए राजपूतों के साथ मिल गए। डूंगरपुर में आयोजित बाणेश्वर उत्सव में बहुत सारे भील एकत्र होते हैं। समारोह में, वे उत्सव में गाते और नृत्य करते हैं। भीलों के लिए होली एक और उत्सव है। भील संस्कृति गहराई से अंधविश्वास पर आधारित है।

#### ● मिनास

शेखावाटी क्षेत्र और राजस्थान के निकटवर्ती पूर्वी क्षेत्रों में राजस्थान की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति मिनास मिनास का प्रभुत्व है। वे मूल रूप से सिंधु घाटी संस्कृति के निवासी थे। बड़ी आंखें, एक हल्की भूरी त्वचा, और बड़े होंठ मीनाओं के हड़ताली लक्षणों में से हैं, जो लंबे और एथलेटिक रूप से निर्मित हैं। मिनास में साक्षरता दर भीलों के समान ही खराब है। उन्होंने हाल ही में शादी की है।

#### ● गड़िया लोहार

गड़िया लोहार, जो पहले एक योद्धा जनजाति थे, ने अपना नाम आकर्षक बैलगाड़ी से प्राप्त किया जिसे गडी कहा जाता था। वे आजकल मोबाइल लुहार का काम करते हैं।

सम्राट अकबर द्वारा महाराणा प्रताप को चित्तौड़गढ़ से खदेड़ने के बाद, वे अपने देश चले गए।

- **गरासिया**

दक्षिणी राजस्थान में आबू रोड के पास गरासिया नाम से जानी जाने वाली एक गौण राजपूत जाति पाई जाती है। इस जातीय जनजाति में शादी करने की एक दिलचस्प रस्म है।

- **धार्मिक संगठन :-**

अलौकिक व्यवस्था के साथ मानव जाति के संबंधों को नियंत्रित करने वाली संस्थागत भूमिकाओं और प्रक्रियाओं की जटिलता को हम धार्मिक संगठन कहते हैं। यह इस बात पर ध्यान दिए बिना सत्य है कि कोई अलौकिक क्रम की कल्पना कैसे करता है। इसमें धार्मिक संगठन अभ्यास के नियमन के साथ-साथ सच्चे सिद्धांत का प्रचार और झूठे सिद्धांत का दमन शामिल हो सकता है; धार्मिक संगठन विशेषज्ञों की भर्ती, शिक्षा और पेशेवर समाजीकरण की प्रक्रिया; आम लोगों के बीच प्राधिकरण संरचनाएं और क्षेत्रीय और लौकिक समन्वय पर उनका अधिकार। धार्मिक संगठन के स्थानों, अवधियों, परिसरों और उपकरणों के आधार, सीमा और प्रकृति के साथ-साथ ऐसी संपत्ति और अस्थायीताओं का नियंत्रण जो धार्मिक संगठन के अधिकारियों के अधिकार से परिचित हों; और धार्मिक संगठन के क्षेत्रीय लॉट के साथ धार्मिक संगठन के अधिकारियों का समन्वय कम अध्ययन हैं, और जो मौजूद हैं, उनमें से बहुत कम समाजशास्त्रीय विश्लेषण का उपयोग करते हैं। यह इस तथ्य के बावजूद है कि ढेर सारे धार्मिक संगठन अध्ययन उपलब्ध हैं। संगठन सिद्धांत जैसा कि यह समाजशास्त्र में स्थापित है गैर-पश्चिमी धार्मिक संगठन परंपराओं के लिए बहुत सीमित अनुप्रयोग है।

- **आदिवासी समाज की राजनीतिक चेतना के विकास में धार्मिक संगठनों की भूमिका**

यहाँ राजस्थान में आदिवासी समाज की राजनीतिक चेतना पर कुछ प्रमुख बिंदु हैं:

- **राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता:-** राजस्थान में जनजातीय समुदाय में एक राजनीतिक चेतना है जिसमें मतदान के अधिकार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के अधिकार सहित राजनीतिक अधिकारों का ज्ञान शामिल है।
- **राजनीतिक मुद्दों की समझ:-** आदिवासी समाज जो राजनीतिक रूप से जागरूक हैं, उन राजनीतिक चिंताओं से अवगत हैं जो उनके जीवन के तरीके पर प्रभाव डालते हैं, जिसमें सामाजिक न्याय, भेदभाव और संसाधनों तक पहुंच शामिल है।

- **लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी:-** लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेना, जैसे चुनावों में मतदान करना और राजनीतिक नेताओं और संस्थानों के साथ बातचीत करना, राजनीतिक जागरूकता होने के सभी उदाहरण हैं।
- **जवाबदेही की मांग:-** राजनीतिक रूप से जागरूक जनजातीय समूह राजनीतिक हस्तियों और संस्थानों से जिम्मेदारी की उम्मीद करते हैं कि उनकी जरूरतों और मुद्दों का ध्यान रखा जाए।
- **सामाजिक न्याय की वकालत:-** सामाजिक न्याय और निष्पक्षता की वकालत करना, जैसे कि पूर्वाग्रह से जूझना और समावेशी विकास को बढ़ावा देना, राजनीतिक जागरूकता का एक और पहलू है।
- **राजनीतिक कार्रवाई के लिए लामबंदी:-** अपने अधिकारों की मांग करने और राजनीतिक चिंताओं को दूर करने के लिए, राजनीतिक रूप से व्यस्त जनजातीय संस्कृति विरोध या अन्य प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों का आयोजन करती है।
- **राजनीतिक संस्थानों में प्रतिनिधित्व:-** राजनीतिक जागरूकता में राजनीतिक नेताओं की आवश्यकता भी शामिल है जो आदिवासी समूह के सामने आने वाले मुद्दों और राजनीतिक संस्थानों में प्रतिनिधित्व की मांग से अवगत हैं।
- **धार्मिक संगठन द्वारा शुरू किए गए कुछ कार्यक्रम**

➤ **स्वच्छता**

एसबीएम के तहत स्वच्छता अभियान, जागरूकता शिविर, शौचालय निर्माण, जल निकासी और स्कूल में पानी की टंकियों की सफाई का आयोजन किया गया। कचरे का संग्रह और कूड़ेदान उपलब्ध कराना। राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के आदिवासी छात्र स्वयंसेवकों द्वारा जल संरक्षण, बेटी बचाओ, स्वच्छ भारत मिशन, व्यक्तिगत स्वच्छता और शौचालयों के उपयोग आदि मुद्दों पर जागरूकता रैलियां आयोजित की गईं। आदिवासी छात्रों के स्वयंसेवकों ने गांवों में बंद नालियों और स्कूल परिसर की भी सफाई की।

➤ **स्वास्थ्य**

स्वास्थ्य जांच, रक्तदान, टीकाकरण, नशामुक्ति शिविर, योग शिविर आयोजित किए गए। कोविड जागरूकता शिविर, दवा, क्वाथ, मास्क, सैनिटाइजर एवं राहत सामग्री का वितरण किया गया। रैलियों और जागरूकता शिविरों के माध्यम से पोषक-उद्यान, आयरन से भरपूर अनाज का सेवन और महिलाओं के स्वास्थ्य के मुद्दों पर जागरूकता को बढ़ावा दिया गया, ग्रामीणों विशेष रूप से महिलाओं और लड़कियों को स्वास्थ्य स्वच्छता और पोषण के महत्व के बारे में

शिक्षित किया गया। नेहरू युवा केंद्र, उदयपुर ने कल्याण, सकारात्मक जीवन शैली और फिट इंडिया पर जनजातीय युवा प्रशिक्षण का आयोजन किया। स्वास्थ्य शिविरों में जनजातीय महिलाओं की निःशुल्क जांच, स्तन कैंसर जांच व आंखों की जांच की गई, उन्हें मास्क व सेनेटरी नैपकिन भी प्रदान किए गए।

#### ➤ कृषि उत्पादन और आय बढ़ाने के लिए हस्तक्षेप

उच्च उपज वाली फसल के साथ बीज प्रतिस्थापन, फल, सब्जी की किस्में, वैज्ञानिक फसल, उच्च आय और उत्पादकता के लिए सब्जियों की खेती, फलों के पौधे का वितरण, जैविक खेती को बढ़ावा देना, मशरूम की खेती, कृषि मशीनीकरण, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन। कटाई के बाद की तकनीकों पर प्रशिक्षण और प्रदर्शन। लहसुन डी-ब्रेकिंग, एलोवेरा जेल एक्सट्रैक्शन, मक्का डी-हस्कर और प्याज के छिलके हटाने वाली मशीनें। कड़ी मेहनत को कम करने और किसानों की दक्षता बढ़ाने के लिए, उन्हें निराई ऑपरेशन मशीन, बैटरी से चलने वाले नैपसैक स्प्रेयर, स्टील के डिब्बे, दूध के डिब्बे, बैल का जूआ, कुदाल, कुल्हाड़ी आदि प्रदान की गई।

#### ➤ एएच (पशुपालन) हस्तक्षेप

एमपीयूएटी, उदयपुर ने पिछवाड़े की खेती के लिए 152 प्रतापधन पोल्ट्री इकाइयां विकसित कीं, आदिवासी किसानों को कड़कनाथ और प्रतापधन के अंडे हैचिंग, पानी की ट्रे और फीडिंग ट्रे, सिरोही नस्ल के हिरन वितरित करके बकरी की नस्ल सुधार, पशु उपचार और टीकाकरण शिविर प्रदान किए गए। डेयरी, वर्मीकम्पोस्ट एवं अजोला इकाइयों का प्रशिक्षण एवं स्थापना। 'उन्नत बकरी पालन एवं प्रबंधन' और 'कुक्कुट पालन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। कार्यक्रम में बकरी पालन के आर्थिक महत्व, आहार प्रबंधन, टीकाकरण, कृमि मुक्ति, आवास एवं सामान्य प्रबंधन पर व्याख्यान दिया गया।

#### ➤ अनुसूचित क्षेत्रों में आजीविका के अवसर

यूएसआर के तहत, राज मिस्त्री, दुपहिया वाहन मरम्मत, सेल फोन मरम्मत, महिला दर्जी में प्रशिक्षण के माध्यम से अनुसूचित क्षेत्र में आजीविका सुरक्षा के अवसर पैदा करने के उद्देश्य से 3 राज्य विश्वविद्यालयों द्वारा 8 अनुसूचित क्षेत्र के गांवों को गोद लिया गया है। साथ ही, युवा आरएसएलडीसी, सीआईपीईटी, एमएसएमई और आरकेसीएल के केंद्रों में विभिन्न पाठ्यक्रमों जैसे हेल्थ केयर एंड नर्सिंग, ब्यूटी पार्लर, हॉस्पिटैलिटी, गारमेंट एंड अपैरल मेकिंग, हाउस वायरिंग, इलेक्ट्रिकल, जेम एंड ज्वैलरी आदि में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

## 2. अध्ययन का उद्देश्य

- राजस्थान के जनजातीय विकास में धार्मिक संगठनों की भूमिका का अध्ययन करना।
- राजस्थान के आदिवासी समुदाय की राजनीतिक जागरूकता में धार्मिक संस्थाओं का योगदान।
- राजस्थान के धार्मिक संगठनों और सरकारी अधिकारियों द्वारा अपने आदिवासी लोगों की उन्नति के लिए नीतियों और योजनाओं की स्थापना।
- सभी विकास परियोजनाओं का मुख्य उद्देश्य इन अलग-थलग पड़े आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार लाना है।
- राजस्थान के आदिवासी समाज में राजनीतिक चेतना के स्तर का निर्धारण करना
- उनकी राजनीतिक भागीदारी के लिए प्रेरणा के कारकों की जांच करना;
- राजनीतिक भागीदारी में अंतर-आदिवासी भिन्नता का अध्ययन करना;
- आदिवासी नेताओं की उनके समाज में राजनीतिक भागीदारी के स्तर के प्रभाव की जांच करना।

## 3. साहित्य समीक्षा

भारत में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति: एचसी उपाध्याय द्वारा संपादित पुस्तक अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति: एक सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल (1991) में कहा गया है कि अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति गरीबी में रहती है और छोटे काम करती है। उनके वातावरण में परिवर्तन ने उनकी आशाओं को जगाया है, फिर भी उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति उन्हें करियर बदलने से रोकती है। वे इस वैश्विक क्रांति में भाग नहीं ले सकते। वे तनाव में हैं। भारतीय संविधान अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए राजनीतिक और आर्थिक सीटें आरक्षित करता है। आजादी के बाद अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए कार्यक्रम शुरू किए गए। केंद्र और राज्य सरकारें इनके विकास में करोड़ों का निवेश कर रही हैं।

जनजातीय क्षेत्रों में औद्योगीकरण (1994) में उनकी संपादित पुस्तक में, देवेन्द्र ठाकुर और डीएन ठाकुर का तर्क है कि जबकि आदिवासी क्षेत्रों में औद्योगीकरण स्वतंत्रता से पहले शुरू हुआ था, यह स्वतंत्रता के बाद ही शुरू हुआ जब भारी उद्योग जैसे रांची में हीविंग इंजीनियरिंग, राउरकेला में लोहा और इस्पात कारखाने, भिलाई, दुर्गापुर आदि की स्थापना हुई। औद्योगिक कचरे और धुएं ने उस आदिवासी क्षेत्र को भर दिया है जो कभी साफ था। वे अकुशल मजदूरों

के रूप में काम करते हैं और गरीबी और पिछड़ेपन से बाहर निकलने के लिए मजबूर हैं, बदले में उन्हें कुछ भी नहीं मिलता है। उन्हें अपना घर और जमीन भी गंवानी पड़ सकती है। यह जनजातीय बेल्ट औद्योगीकरण का विश्लेषण करता है। औद्योगीकरण में जनजातीय अर्थशास्त्र की समीक्षा की गई है। आदिवासी बैंकवाटर में बड़े, छोटे और कुटीर उद्यमों की भी स्क्रीनिंग की जाती है। इसमें ट्राइबल बेल्ट इंडस्ट्रियल कॉम्प्लेक्स शामिल है। आदिवासी औद्योगिक योजना प्रभावी रही।

अनिल कुमार सिंह द्वारा संपादित ट्राइब्स एंड ट्राइबल लाइफ (1993) में, आदिवासी समाजों ने "सभ्य" लोगों के साथ अपनी पहली मुठभेड़ के बाद से प्रगति की है। ब्रिटिश सैन्य-इतिहासकारों ने उन्हें भारत में "साम्राज्य की असभ्य जातियों" का नाम दिया, लेकिन ईसाई मिशनरियों ने दिखाया कि वे सभ्य लोगों की तुलना में अधिक जटिल थे। ईसाई मिशनरियों ने शिक्षित किया, स्वास्थ्य में सुधार किया और देशी जनजातियों का आधुनिकीकरण किया। आज आदिवासी साहित्य मानव चरित्र और प्रयास की अद्भुत विविधता का प्रतिनिधित्व करता है।

सिंह द्वारा लिखित केएस द शेड्यूल्ड ट्राइब्स (1994) पीपल ऑफ इंडिया प्रोजेक्ट का हिस्सा था और बड़े पैमाने पर एंथ्रोपॉलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की पहल का परिणाम था। इस देश में सैकड़ों समूहों, जातियों और कबीलों पर इसके प्रमाण मिलते हैं। इन समुदायों को वर्णानुक्रम में क्रमबद्ध किया गया है और इसमें संस्कृति और समाज, भाषा, भूगोल, लिपि, जैविक भिन्नता, शिक्षा स्तर और विकास के सभी क्षेत्र शामिल हैं। पुस्तक में भारत के 461 आदिवासी समूहों और उनके 172 प्रभागों को शामिल किया गया है। अरुणाचल प्रदेश और लक्षद्वीप ने पहली बार कुछ अनुसूचित जनजातियों को मान्यता दी, जिससे यह सबसे व्यापक सूची बन गई। यहां खनिज समृद्ध पहाड़ी क्षेत्र हैं जहां आदिवासी रहते हैं। विकास, विशेष रूप से शिक्षा, संचार और स्वास्थ्य देखभाल ने उन्हें प्रभावित किया है। निजी संपत्ति मौजूद है। आधुनिक व्यवसाय, विशेषकर सरकारी सेवा, पुराने लोगों की जगह ले रहे हैं, जो कम हो गए हैं।

चौधरी और सौमैत्र मोहन पटनायक द्वारा लिखित सुकांत के. इंडियन ट्राइब्स एंड द मेनस्ट्रीम (2008) मुख्यधारा की भारतीय सभ्यता और जनजातीय मान्यताओं के बीच विभाजन की जांच करता है। यहाँ, हम इस विरोधाभास और इसके सामाजिक-राजनीतिक परिणामों की व्याख्या करने का प्रयास करते हैं। माइक्रो और मैक्रो जांच जनजातीय समुदायों पर मानक मानवशास्त्रीय



सिद्धांतों पर सवाल उठाती है। वैकल्पिक रूप से, हम आदिवासियों को पीड़ित और राष्ट्र निर्माण के साधन के रूप में देख सकते हैं।

उनकी संपादित पुस्तक ट्राइबल मूवमेंट्स इन इंडिया: विजन्स ऑफ डॉ. के.एस. सिंह (2012), कमल के. मिश्रा और जी. जयप्रकाशन ने डॉ. सिंह को एक अनुकूल विद्वान, प्रशासक और उत्साही ऐतिहासिक नृवंशविद के रूप में चित्रित किया है। डॉ. सिंह ने पूरे चार दशकों में आदिवासी आंदोलनों, आदिवासी किसान संबंधों, आदिवासी प्रथागत कानून, आदिवासी अर्थशास्त्र और अन्य पर कई अध्ययन लिखे। उन्होंने इतिहासकारों और मानवविज्ञानियों को निराश करते हुए पाठकों और निर्णय निर्माताओं को अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लिए ऐतिहासिक अध्ययन और मानवशास्त्रीय फील्डवर्क का उपयोग किया। भारतीय जनजातीय आंदोलनों पर डॉ. सिंह के मौलिक कार्य इस संग्रह में शामिल हैं।

### Methodology

For the present study the author select Naudhia village under Raghampur Gram Panchayat of Purulia district, West Bengal. However, author of the present paper intense to specific indigenous group i.e. Kora-Mudi from Mudi para hamlet in the

### Methodology

For the present study the author select Naudhia village under Raghampur Gram Panchayat of Purulia district, West Bengal. However, author of the present paper intense to specific indigenous group i.e. Kora-Mudi from Mudi para hamlet in the

### Methodology

For the present study the author select Naudhia village under Raghampur Gram Panchayat of Purulia district, West Bengal. However, author of the present paper intense to specific indigenous group i.e. Kora-Mudi from Mudi para hamlet in the

### Methodology

For the present study the author select Naudhia village under Raghampur Gram Panchayat of Purulia district, West Bengal. However, author of the present paper intense to specific indigenous group i.e. Kora-Mudi from Mudi para hamlet in the

#### 4. परिकल्पना

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, इस अध्ययन में पाँच मुख्य परिकल्पनाओं का परीक्षण करने का प्रयास किया गया है:

- जिन नेताओं के पास अधिक शिक्षा है, उनके राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की संभावना अधिक होती है;
- जुड़ाव का स्तर पारिवारिक आय के साथ बढ़ता है;
- नेता अपने बीच के वर्षों में युवा या वरिष्ठ नेताओं की तुलना में अधिक सक्रिय होते हैं;
- पुरुष नेताओं की तुलना में महिला नेता अधिक सहभागी होती हैं;
- किसी भी अन्य जनजाति से अधिक, संथाल जनजाति के सक्रिय नेता हैं।

#### 5. अनुसंधान क्रियाविधि

राजस्थान के उदयपुर जिले के एक केस स्टडी के माध्यम से उपरोक्त समस्याओं की जांच करने का प्रयास किया है। पंचायती राज संस्थाओं की निर्णय लेने की प्रक्रिया में औपचारिक संस्थागत नेताओं की भागीदारी के पैटर्न के अध्ययन के लिए एक जिले को एक उपयुक्त 'ब्रह्मांड' के रूप में लिया गया है क्योंकि यह अनावश्यक खर्च और श्रम को शामिल करने के लिए बहुत बड़ा नहीं है और अभी भी बहुत छोटा नहीं है। अप्रतिनिधि होना और गलत निष्कर्ष निकालना। जैसा कि इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य एक आदिवासी जिले में नेताओं की राजनीतिक भागीदारी का अध्ययन करना है, मयूरभंज उस दृष्टिकोण से एक प्रतिनिधि जिला है, क्योंकि राजस्थान राज्य में इसकी प्रतिशतता के संदर्भ में इसकी सबसे बड़ी जनजातीय आबादी है।<sup>73</sup> दूसरा, भौगोलिक क्षेत्रफल, 74 जनसंख्या, 75 और पंचायती राज संस्थाओं के संजाल की दृष्टि से उदयपुर जिला कोई छोटी इकाई नहीं है। तीसरे, उदयपुर जिले को शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के लिए इसलिए चुना गया है क्योंकि वह इस जिले से निकटता से जुड़ा हुआ है।

### ➤ डेटा संग्रहण

अनुसंधान के विषय से संबंधित आंकड़े दो प्रमुख स्रोतों से एकत्र किए गए थे: (i) प्राथमिक स्रोत और (ii) द्वितीयक स्रोत। शोधकर्ता ने क्षेत्र से प्राथमिक डेटा एकत्र करने के लिए (ए) साक्षात्कार, (बी) अवलोकन, और (सी) अनौपचारिक चर्चा सहित कुछ शोध तकनीकों का उपयोग किया।

कुछ मायनों में, द्वितीयक स्रोत अनंत थे। हमने अक्सर राजनीतिक भागीदारी, संचार, दृष्टिकोण, समाजीकरण, जागरूकता और प्रेरणा के साथ-साथ सामाजिक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीतिक मनोविज्ञान, राजनीतिक समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, संगोष्ठी रिपोर्ट, पंचायती राज की रिपोर्ट जैसे विषयों पर आधिकारिक ग्रंथों से परामर्श किया। चुनाव, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के आयोग की रिपोर्ट आदि। राजनीतिक और सामाजिक आर्थिक आंकड़ों पर जानकारी संकलित करने के लिए विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया गया था। अध्ययन के विषय पर माध्यमिक जानकारी कई स्रोतों से एकत्र की गई थी, जिनमें बारीपदा और खुंटा। में पंचायत समिति कार्यालय, जिला मुख्यालय कार्यालय, बारीपदा और कई पुस्तकालय शामिल हैं।

## 6. डेटा विश्लेषण

### ● जनजातीय समुदाय

इस तथ्य के अलावा कि सभी 348 उत्तरदाता अनुसूचित जनजाति (एसटी) से संबंधित हैं, नमूने की कई अन्य विशेषताएं हैं। नमूना उत्तरदाता, जैसा कि तालिका संख्या: 1 में प्रस्तुत किया गया है, दस प्रमुख अनुसूचित जनजातियों - संताल, बथुडी, कोल, भूमिजा, भुइयां, मुंडा, खरिया, महली, देहुरी और सबर का प्रतिनिधित्व करते हैं। सुविधा के लिए, जीपी और पीएस के आदिवासी नेताओं की तीन श्रेणियां - पंचायत समिति सदस्य (पीएसएम), सरपंच और वार्ड सदस्य (डब्ल्यूएम) - को अब से क्रमशः ए, बी और सी कहा जाएगा -

तालिका संख्या :1 जनजातीय समुदाय और नेताओं की श्रेणियों द्वारा उत्तरदाताओं का प्रतिशत वितरण दर्शाता है।

आदिवासी समुदाय	नेताओं की श्रेणियाँ			कुल
	A	B	C	
भील	12(45%)	12(82%)	193(65%)	217(93%)
मिनास	-	32(56%)	35(12%)	67(68%)
गड़िया लोहार	02(4%)	04(14%)	14(5%)	20(23%)
गरासिया	-	05(4%)	12(3%)	17(7%)
सहरिया	-	15(54%)	12(3%)	27(57%)
कुल	15((49%)	108(28%)	210(153%)	348(100%)

#### ● शैक्षिक

एक शिक्षित आदिवासी सूचित निर्णय लेने और समुदाय के राजनीतिक और सामाजिक आर्थिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होता है। उभरते हुए देशों में शिक्षा अक्सर नेताओं को गैर-नेताओं से अलग करती प्रतीत होती है। इसलिए औपचारिक शिक्षा प्राप्त किए बिना नेतृत्व की भूमिका निभाना आश्चर्यजनक है। शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में प्रतिदर्श नेताओं को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है। शब्द "निरक्षर"\* उन लोगों को संदर्भित करता है जिनके पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं है। दूसरा शैक्षिक समूह, जिसे "प्राथमिक" के रूप में जाना जाता है, उन नेताओं से बना है जिन्होंने VH के माध्यम से कक्षा I को पूरा किया है। "मैट्रिकुलेशन और ऊपर" और "मैट्रिकुलेशन से नीचे" क्रेडेंशियल्स वाले नेता क्रमशः तीसरी और चौथी श्रेणियां बनाते हैं। नमूना नेताओं का अपेक्षित शैक्षिक वितरण तालिका संख्या : 2 में दिखाया गया है।

तालिका संख्या : 2 शैक्षिक मानक द्वारा उत्तरदाताओं के प्रतिशत वितरण का संकेत

शैक्षणिक स्तर	नेताओं की श्रेणियाँ			कुल
	A	B	C	
गैर साक्षर	03(10%)	02(5%)	102(32%)	260(47%)
प्राथमिक	04(24%)	04(12%)	122(41%)	130(77%)
मैट्रिक से कम	04(34%)	03(54%)	64(23%)	71(111%)
मैट्रिक और ऊपर	07(34%)	02(24%)	13(4%)	22(62%)
कुल	18(102%)	11(82%)	301(100%)	348(100%)

उत्तरदाताओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि में भिन्नता तालिका संख्या 2 में देखी जा सकती है। इस आदिवासी क्षेत्र में 300 डब्ल्यूएम में से 32% निरक्षर हैं, 41% ने केवल प्राथमिक विद्यालय पूरा किया है, 23% ने मैट्रिक पूरा नहीं किया है, और 4% ने पूरा किया है मैट्रिक और उच्च शिक्षा। 11 सरपंचों में से 5% निरक्षर हैं, 14% ने केवल प्राथमिक विद्यालय पूरा किया है, 54% ने मैट्रिक पूरा नहीं किया है, और 24% ने इसे और उच्चतर पूरा किया है। पीएस स्तर पर 18 सदस्यों में से 10% निरक्षर हैं, 26% केवल प्राथमिक विद्यालय में हैं, 24% के पास मैट्रिक तक की शिक्षा का स्तर है, और 34% के पास मैट्रिक से ऊपर की डिग्री या अन्य प्रमाणिकताएं हैं। इसलिए, इन दो आदिवासी क्षेत्रों में अधिकांश पंचायत नेता सिर्फ मैट्रिक पास हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि आदिवासी समुदायों में शैक्षिक संसाधनों और ज्ञान की कमी है, और क्योंकि विभिन्न जनजातियों की अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे विकसित हो रही है।

● महिलाओं की भागीदारी

आधुनिकता, उद्योग और शहरीकरण के मार्च ने वर्तमान स्थिति में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसूचित जनजाति के निवासियों के बाहरी स्वरूप को प्रभावित किया है। इससे आदिवासी महिलाओं की स्थिति और उनकी संस्कृति के भीतर स्थान में सुधार हो सकता है। अब यह पता लगाने का सुझाव दिया जाता है कि स्थानीय राजनीति में महिलाओं के शामिल होने के बारे में निर्वाचित आदिवासी बुजुर्ग कैसा महसूस करते हैं।

**तालिका 3 : जनजातीय नेताओं की उनकी प्राथमिकता के अनुसार प्रतिक्रिया को दर्शाना**

**गांव की बैठकों में महिलाओं की भागीदारी**

जवाब	% के साथ नेता की संख्या			कुल
	पंचायत समिति सदस्य	सरपंच	वार्ड सदस्य	
हाँ	32(3%)	15(14%)	31(2%)	78(37%)
नहीं	12(92%)	14(67%)	232(96%)	270(25%)
कोई जवाब नहीं	-	-	-	
कुल	44(95%)	29(81%)	263(98%)	348(100%)

## 7. निष्कर्ष

भारत के सबसे बड़े राज्यों में से एक, राजस्थान, कुछ मायनों में अविकसित और पिछड़ा हुआ है। एसटी आबादी का 22.21 प्रतिशत है। दूसरों ने इन समुदायों की अवहेलना की है। जमींदारों और अन्य बिचौलियों द्वारा उनका फायदा उठाया गया है। इसके अतीत में, आदिवासी नेताओं के नेतृत्व में इस शोषण के खिलाफ छिटपुट विद्रोह हुए हैं। इस शोषण को समाप्त करने के लिए धार्मिक संगठन ने कई निवारक और उपचारात्मक कार्रवाई की है। हालाँकि कुछ उत्साहजनक विकास हुए हैं, लेकिन राजस्थान की जनजातियों की स्थिति बिगड़ रही है।

जनजातीय गांवों में अधिकांश सरपंचों और पीएसएम ने सरकारी कर्मचारियों या समाज के अन्य मलाईदार स्तरों द्वारा जनजातीय आबादी के शोषण के मुद्दे को मान्यता दी है। हालाँकि, युवा नेता जिनके पास अधिक शिक्षा और पैसा है, वे इस पर अधिक ध्यान देते हैं। हालाँकि, अन्य जातीय समूहों के नेता राजस्थान के तहत अपनी जनजातियों को फलते-फूलते देखना

चाहते हैं। कुछ नेता इस उद्देश्य के साधन के रूप में 'आदिवासी परिषद' का समर्थन करते हैं। नेता अभी भी स्थापित आदिवासी राजनीतिक संरचनाओं से जुड़े हुए हैं। वे पारंपरिक नेताओं को उच्च सम्मान देते हैं। हालाँकि, जब उनके समुदाय में उत्पन्न होने वाले मुद्दों को हल करने की बात आती है, तो वे पारंपरिक लोगों के बजाय आधुनिक संस्थागत नेताओं को चुनते हैं।

शोध के अनुसार जनजातीय सदस्यों के लिए जनसंपर्क करने की प्राथमिक प्रेरणा ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठा और राजनीतिक दबदबे को बढ़ाना है। जो व्यक्ति सरपंच और पीएसएम के रूप में चुने गए हैं, वे भविष्य में एमएलए और एमपी बनने के लिए प्रशिक्षण के लिए एक मंच के रूप में इसका उपयोग करके अपनी स्थिति का अधिकतम लाभ उठाना चाहते हैं।

## 8. संदर्भ :-

1. रामकृष्णन पी.एस. पवित्र का संरक्षण। पारिस्थितिक और नीतिगत निहितार्थ। इन: कोठारी ए, संपादक। समुदाय और संरक्षण। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस; 1998.
2. नेटो एनएएल, ब्रूक्स एसई, अल्वेस आरआरएन। ईशू से ओबाटाला तक: ब्राजील में कैंडोम्बले "टेरेरियोस" में बलि अनुष्ठानों में इस्तेमाल होने वाले जानवर। जे एथनोबिओल एथनोमेड। 2009;5:23। डीओआई: 10.1186/1746-4269-5-23।
3. इंसन नॉर्मन, स्वैच्छिक सामाजिक सेवाएं, बासित ब्लैकवेल और मॉर्टिन रॉबर्टसन, ऑक्सफोर्ड, 1981, पी।1
4. अदेओला मो. नाइजीरिया की संस्कृति, धार्मिक त्योहारों और पारंपरिक चिकित्सा में जंगली जानवरों और उनके अंगों का महत्व। पर्यावरण संरक्षण 1992;19:125-34।
5. आरआरएन ए. ब्राजील के उत्तर और पूर्वोत्तर में जादुई-धार्मिक उद्देश्यों के लिए यूरानोस्कोडन सुपरसिलियोसस लिनिअस (1758) (ट्रोपिडुरी-डे) का व्यावसायीकरण। सिटीबस। 2008;8:257-8।
6. बोबो, एट अल। Nkwende Hills फॉरेस्ट रिज़र्व के आस-पास वन्यजीवों के उपयोग और वन्य जीवों के संरक्षण में वर्जनाओं की भूमिका; दक्षिण-पश्चिम कैमरून। जे एथनोबिओल एथनोमेड। 2014;11:2. <https://doi.org/10.1186/1746-4269-11-2>।

7. घोष टीएन, सिंहमहापात्र आर, मंडल एफबी। बांकुड़ा जिले के संथालों के बीच जानवरों का पारंपरिक उपयोग। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम शोध का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2013;2(6):95-6। <http://www.mnkjournals.com/ijlrst.html>
8. शाह के.बी. संस्कृति संरक्षण है। निवास स्थान हिमालय। A Resources HimalayaFactfile IX No. II काठमांडू, नेपाल; 2002.40। सोदेइंडे ओए, सोइवु डीए। नाइजीरिया में पारंपरिक चिकित्सा व्यापार का पायलट अध्ययन। ट्रैफिक बुल.1999; 18: 35-40।
9. अल्वेस आरआरएन, लेओनेटो एनएएल, सैन्टाना जीजी, विएरा डब्ल्यूएलएस, अल्मीडा डब्ल्यूओ। ब्राजील में औषधीय और जादुई धार्मिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले सरीसृप। एपल हर्षटोल। 2009;6:257-274। डीओआई: 10.1163/157075409X432913।
10. मार्टिन जीजे। एथनोबॉटनी- एक विधि मैनुअल। लंदन: चैपमैन और हॉल; 1995.
11. अली एस. द बुक ऑफ इंडियन बर्ड्स। बॉम्बे: बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी; 1996.
12. एलेक्सियाडेस एमएन। नृवंशविज्ञान अनुसंधान के लिए चयनित दिशानिर्देश। एक फील्ड मैनुअल। आर्थिक वनस्पति विज्ञान ब्रॉक्स में अग्रिम। न्यूयॉर्क बॉटनिकल गार्डन। 1996; 10.
13. आरआरएन ए. ब्राजील के उत्तर और पूर्वोत्तर में औषधीय और जादुई-धार्मिक उद्देश्यों के लिए पशुओं का उपयोग और व्यापार। पीएचडी शोधलेख। जोआओ पेसोआ, पाराइबा: पाराइबा का संघीय विश्वविद्यालय; 2006.
14. लोहानी यू। मध्य नेपाल के जिरैल्स के बीच जानवरों का पारंपरिक उपयोग। एथनो मेड। 2011;5(2):115-124। डीओआई: 10.1080/09735070.2011.11886398।
15. अल्वेस आरआरएन, ओलिवेरा एमडीजीजी, बारबोजा आरआरडी, लोपेज़ एलसीएस। कैंपिना ग्रांडे, एनई ब्राजील ह्यूमन इकोलॉजी रिव्यू 2010;17:11-17 के बाजारों में वाणिज्यिकृत औषधीय जानवरों का एक एथनोजूलोजिकल सर्वेक्षण।